विधान विधि निर्देशिका

जाप्य स्थापना विधि

1. जाप में बैठने वालों के लिए आवश्यक नियम :-

(विधानाचार्य द्वारा निम्न नियम जाप में बैठने वाले भाइयों को बता दिए जायें)

(1) मंडल विधान में अपनी शक्ति व समय का विचार कर 21 हजार, 51 हजार, 71 हजार या 1.25 लाख तक जाप प्रतिष्ठाचार्य द्वारा निर्दिष्ट मंत्र का किया जाना चाहिए।

(2) जाप करनेवाले व्यक्ति गृहीतमिथ्यात्व, लोकनिंद्यकार्य, अन्याय व अभक्ष्य मद्य, माँस, मधु के त्यागी अवश्य हों।

(3) अनुष्ठान के दिनों में पूर्ण संयम, ब्रह्मचर्य से रहें।

(4) रात्रि में चारों प्रकार के आहार (खाद्य, पेय, लेय, स्वाद्य) ग्रहण नहीं करें। आवश्यकता होने पर दवाई की छूट रखें। बाजार (होटलादि) का भोजन न लें। दिन में एक अथवा दो बार शुद्ध भोजन करें। बीच में पान, सुपारी, गुटका आदि का सेवन न करें।

(5) मंत्र का उच्चारण शुद्ध करें एवं परस्पर बातें न करें।

(6) असाध्य शारीरिक व मानसिक व्याधियुक्त न हों।

(7) जाप के समय शुद्ध धोती-दुपट्टा पहनें।

(8) मन्त्र का जाप प्रतिदिन करें तथा अपना संकल्प पूरा करें।

(9) महोत्सव की अवधि तक चमड़े की वस्तुओं के प्रयोग का त्याग करें।

(10) सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त से पूर्व दिन में ही जप करें।

2. जाप्य स्थापना विधि में निम्न कार्य सम्पन्न होंगे :-

(क) प्रारंभिक तैयारी (ख) मंगल कलश स्थापना (ग) यंत्राभिषेक (घ) मंगलाष्टक (ड़) अमृत स्नान (त) अंगन्यास (थ) पंचपरमेष्ठी पूजन (द) जाप संकल्प।

प्रारंभिक तैयारी

विधान प्रारंभ करने वाले दिन प्रातःकाल सूर्योदय के बाद जाप प्रारंभ करें। जाप का स्थान एकान्त में हो, जहाँ बालक व अन्य जन जाप में व्यवधान न कर सकें। कमरा शुद्ध जल से धोकर साफ कर लिया जाए।

पूर्व या उत्तर दिशा में शुद्ध जल से धोकर टेबिल, चौकी एवं सिंहासन रखें। टेबिल के ऊपर चंदोवा बांधे तथा चंदोवे के बीच में सिंहासन के ऊपर छत्र बांधे। टेबिल पर यंत्राभिषेक के लिए थाली, शुद्ध जल के दो कलश एवं शुद्ध वस्त्र रखें।

टेबिल के दोनों ओर जाप में बैठनेवाले व्यक्तियों की संख्यानुसार शुद्धजल से धुले हुए पाटे लगा दिये जावें जिन पर निम्न सामग्री रखी जाए :-

(पूजन की सामग्री, पूजन की पुस्तक, माला, लवंग, एक कटोरी में संकल्प की सामग्री (हल्दी, सुपारी, पीली सरसों) एवं कागज पर लिखा हुआ जाप का मन्त्र)।

जाप संकल्प

जिस मंत्र का जाप करना हो वह मंत्र जाप करने वाले प्रत्येक व्यक्ति से सुन लिया जाए, तथा उच्चारण का अभ्यास करा दिया जाए।

जाप में बैठनेवाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर जाप की कुल संख्या का परिणाम इसप्रकार निर्धारित करें कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अधिकतम 7 या 9 मालाओं का जाप करें।

जाप करनेवाले व्यक्ति खड़े होकर दाहिने हाथ में संकल्प की सामग्री ले लें। विधानाचार्य द्वारा निम्न मंत्र छोटे–छोटे हिस्सों में पढ़ा जाए जिसे सभी लोग दोहराएँ। संकल्प करने के बाद संकल्प की सामग्री पाटे के दायें कोने पर रख दी जाए। यह सामग्री पूरे विधान पर्यन्त इसी स्थान पर रखी रहे।

संकल्प लेने का मंत्र

''ॐ जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ..... देशे ..... प्रान्ते ..... नाम्निनगरे मासानामुत्तमे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ..... जैनमन्दिरे.....कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्तर्थं ..... इति जापस्य संकल्पं कुर्मः निर्विघ्न समाप्तिर्भवतु अर्हं नमः स्वाहा।''

जाप के मंत्र – निम्न में से प्रसंगानुसार किसी एक मंत्र के जाप का संकल्प करायें।

(1) ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(2) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ध्वजारोहण विधि

निम्न मन्त्र द्वारा ध्वजदण्ड की शुद्धि करावें –

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते पवित्र जलेन ध्वजदण्डं शुद्धिं करोमि।

निम्न मंत्र द्वारा ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बंधावें –

ॐ ह्रीं त्रिवर्णसूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि।

ध्वजदण्ड एवं ध्वज पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा केसर से स्वस्तिक बनवाकर ध्वजारोहण कराया जाये। ध्वजारोहण के समय निम्न श्लोक एवं मंत्रोच्चार करें –

तदग्रदेशे ध्वजदण्डमुच्चैर्भास्वद्विमानं गगनाद्विस्थत्।
निवेश्यलग्ने शुभोपदेश्यं महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा

ध्वजारोहण के पश्चात् सभी लोग सावधान होकर निम्न जैन ध्वज गीत बोलें।

मंगलमय अरु मंगलकारी, शासन ध्वज लहराता।
अनेकान्तमय वस्तु व्यवस्था, का यह बोध कराता।।
स्याद्वाद शैली से जग का, संशय तिमिर मिटाता।
चहुँगति दुःख नशाता, जन–गण–मन हरषाता।।
जिन शासन सुखदाता।।
सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चरणमय मुक्ति मार्ग दरशाता।
जय हे....जय हे... जय हे... जय जय जय हे।।
शासन ध्वज लहराता।।

विधान प्रारंभ विधि

- पूजन–विधान श्रीजी, यन्त्रजी या शास्त्रजी के समक्ष किया जाता है, विधान जिनमन्दिर में ही भगवान की वेदी के समक्ष हो तो बहुत अच्छा है अन्यथा यदि हम जिस स्थान पर विधान कर रहे हैं, वहाँ पर उच्च आसन पर जल से शुद्धि करके श्रीजी, यन्त्रजी या शास्त्रजी को विराजमान करना चाहिए।
- तत्पश्चात् श्रीजी/यन्त्रजी का जलाभिषेक किया जाना चाहिए, जिसके लिए अभिषेक करने वाले सभी भाईयों में इन्द्र प्रतिष्ठा करवाना चाहिए उसमें मुकुट, हार, रक्षासूत्र, तिलक आदि को धारण करवाना चाहिए, पश्चात् पवित्र जल से अमृतस्नान, सर्वांग शुद्धि करवाकर प्रतिमा–प्रक्षाल पाठ पूर्वक श्रीजी का अभिषेक करावें।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवमाद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ..... नाम्निनगरे मासानामुत्तमे ..... मासे ..... पक्षे .....तिथौ .....दिने मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि।

यंत्राभिषेक

ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषेचयामः।

जल गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज।
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ चेतनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा।

निर्मल निर्मलीकरणं पावन पापनाशनम्।
जिनचरणोदकं वंदे अष्टकर्म–विनाशनम्।।

मंगल कलश स्थापना विधि

मंगल कलश की सामग्री – कलश, नारियल, केशरिया कपड़ा, रक्षासूत्र, चन्दन, जल, पुष्प, पीली सरसों, हल्दी, सुपाड़ी, पंचरत्न, सिक्के, आदि।

- श्रीजी की वेदी के सामने विधान का मांडना लगाना चाहिए। जिसकी जल से शुद्धि करनी चाहिए। जिस पर मंगलकलश, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य आदि रखे जावेंगे।
- कलश विराजमानकर्ता इन्द्र–इन्द्राणि को मुकुट, हार, रक्षासूत्र, तिलक आदि धारण करवाकर फिर जल से अमृत स्नान, सर्वांगशुद्धि करावें।

निम्नलिखित मंत्र द्वारा रक्षासूत्र बांधे –

'ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।'

फिर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अमृतस्नान करावें।

'ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।'

फिर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा सर्वाङ्गशुद्धि करावें।

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।'

- फिर मंत्रोच्चारणपूर्वक इन्द्र–इन्द्राणी द्वारा मंगलकलश में मंगल सामग्री डलवाना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्री मंगलकलशे नवरत्नगंधपुष्पाक्षतादीन् निक्षेपयामीति स्वाहा।

- तत्पश्चात् इन्द्राणी द्वारा मंगल कलश पर चन्दन से और मांडने पर (कलश विराजमान किये जाने वाले स्थान पर) पुष्प से स्वस्तिक बनवाना चाहिए, इन्द्र द्वारा मंगल कलश पर रक्षासूत्र बंधवाकर, मंगलकलश पर नारियल रखवाकर अब इन्द्र–इन्द्राणी द्वारा मंत्र उच्चारण पूर्वक मंगलकलश की स्थापना करवानी चाहिए।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् श्रीवीरनिर्वाणसंवत्सरे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... दिने जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यदेशे ..... नगरे ..... जिनमन्दिरे ..... कार्यस्य निर्विघ्न समाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्र शुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न–गन्ध–पुष्पाक्षतादि–बीजपूरशोभितं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

- तत्पश्चात् सभी को अपने स्थान पर व्यवस्थित बैठने का निर्देश देकर मंगलाष्टक पढ़ना प्रारंभ करना चाहिए तथा प्रत्येक छंद के अंत में थाली में पुष्प क्षेपण करने का निर्देश देवें।

अंगन्यास

मंगलाष्टक के बाद दोनों हाथों से अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पाँचों अंगुलियों में क्रम से अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना करें।

सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबरी से मिलाकर सामने करें। इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां अंगुष्टाभ्यां नमः

इन दोनों हाथों की तर्जनियों (अंगूठे के पास की अंगुलियों) को बराबरी से मिलाकर सामने करें। इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

बीच की दोनों अंगुलियों को मिलाकर सामने करके – इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः

दोनों अनामिकाओं को सामने करें, और – इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः

दोनों कनिष्ठा को मिलाकर सामने करें और – इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः

दोनों हथेलियों को बराबर सामने फैलाकर इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः

दोनों करपृष्ठों को बराबर सामने फैलाकर इस मंत्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः

अपने सिर का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा

अपने मुख का स्पर्श करें –

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें –

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मंत्र पढ़कर नाभि का ूं स्पर्श करें –

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाण ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मंत्र पढ़कर पैरों का स्पर्श करें –

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मंत्र पढ़कर अपने शरीर का स्पर्श करें –

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम गात्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें –

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर अपने पूजन सामग्री का स्पर्श करें –

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मम पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर अपनी जगह की ओर देखें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर अंजुलि में जल लेकर सब ओर क्षेपण करें।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वं जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

निम्न मन्त्र से अंजुलि के जल को मन्त्रित कर अपने सिर पर सींचे।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशासु, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः सर्वदिशासु ऊँ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावयं सं सं ब्लीं ब्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

निम्न मंत्र पढ़कर शरीर पर जल सिंचन करें –

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

तदनन्तर प्रतिष्ठाचार्य पुष्प अथवा पीली सरसों को मंत्रित कर सब दिशाओं में फैंकें।

ॐ ह्रूं फट् किरिट किरिट घातय घातय परिविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द वाः वाः ह्रूं फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् विधानाचार्य पुष्प तथा पीली सरसों का क्षेपण कर दिशाओं का बंधन करें।

'ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा' – यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा' – यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ॐ ह्रूँ णमो आइरीयाणं ह्रूँ पश्चिमदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा' – यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा' – यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिग्भ्यः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा' – यह मंत्र पढ़कर दशों दिशाओं में पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

- अब विनयपाठ, पूजापीठिका, देव–शास्त्र–गुरु पूजन, मूलनायक भगवान की पूजन, चौबीस तीर्थंकर पूजन, अर्घ्यावली, समयानुसार करना चाहिए। तत्पश्चात् विधान प्रारंभ करना चाहिए।
- महार्घ्य के पश्चात् शांतिपाठ–विसर्जन के पूर्व समयानुसार शांतिजाप करवाकर 'पुण्याह वाचन' के माध्यम से विधान की समाप्ति करावें।

पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति परमजिनेन्द्रा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतु र्विंशतितीर्थंकर परमदेवाः व प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ त्रिकालवर्ति परमधर्माभ्युदय सीमन्धरप्रभृतयः विदेहक्षेत्रे विहरमाणविंशतितीर्थंकर परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ सप्तर्द्धिविशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनधर्मभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्तन्ताम्।

तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि, शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम् कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, क्ष्वीं, क्ष्वीं, हं सः स्वाहा। श्री मज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्दभक्तिः सदास्तु।

- शांति पाठ, विसर्जन विधान का समापन करवाना चाहिए।
- तत्पश्चात् मंगल कलश को लेकर के वेदी की तीन परिक्रमा लगाना चाहिए तथा पुनः श्रीजी को वेदी पर विराजमान करवाकर, अर्घ्य समर्पित करवाकर, ९ बार णमोकार मन्त्र की जाप पूर्वक विधान की विधि का पूर्ण समापन करें।

संकलन
रुपेन्द्र शास्त्री,छिन्दवाडा
8233372891
rupendrajain1993@gmail.com